ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ

KARNATAKA STATE OPEN UNIVERSITY

ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – ೫೭೦ ೦೦೬

MANASAGANGOTRI, MYSORE - 570 006

हिन्दी

बी.ए./बी.काम्

First Year B.A./B.Com
Hindi Language

काव्य : स्नातक काव्य संग्रह
KAVYA : SANATAK KAVYA SANGRAHA

हिन्दी व्याकरण और अनुवाद
HINDI VYAKARAN AUR ANUVAD

ब्लाक – १ और २ **BLOCK - 1 & 2**

KSOU NATIONAL INTERNATIONAL RECOGNITION

Karnataka State Open University (KSOU) was established on 1st June 1996 with the assent of H.E. Governor of Karnataka as a full fledged University in the Academic year 1996 vide Government notification No./EDI/UOV/dated 12th February 1996 (Karnataka State Open University Act – 1992). The Act was promulgated with the object to incorporate an Open University at the State Level for the introduction and promotion of Open University and Distance Education Systems in the education pattern of the State and the Country for the Co-ordination and determination of standard of such systems.

- With the virtue of KSOU Act of 1992, Karnataka State Open University is empowered to establish, maintain or recognize Institutions, Colleges, Regional Centres and Study Centres at such places in Karnataka and also open outside Karnataka at such places as it deems fit.
- All Academic Programmes offered by Karnataka State Open University are recognized by the Distance Education Council (DEC), Ministry of Human Resource Development (MHRD), New Delhi.
- Karnataka State Open University is a regular member of the Association of Indian Universities (AIU), New Delhi, since 1999.
- Karnataka State Open University is a permanent member of Association of Commonwealth Universities (ACU), London, United Kingdom since 1999. Its member code number: ZKASOPENUINI.
- Karnataka State Open University is a permanent member of Asian Association of Open Universities (AAOU), Beijing, CHINA, since 1999.
- Karnataka State Open University has association with Commonwealth of Learning (COL), Vancouver, CANADA, since 2003. COL is an intergovernmental organization created by commonwealth Heads of Government to encourage the development and sharing of open learning distance education knowledge, resources and technologies.

Higher Education To Everyone Everywhere

ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು-೫೭೦ ೦೦೬

KARNATAKA STATE OPEN UNIVERSITY
Manasagangotri, Mysore-570 006

हिन्दी

बी.ए./बी.काम्

काव्य : स्नातक काव्य संग्रह

First Year B.A./B.Com
Hindi Language

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्व विद्यानिलय, मानसगंगोत्री, मैसूर - ५६० ००६

BLOCK - 1 & 2

ब्लाक - १ और २

निवेदन

प्रिय छात्र-छात्राओं,

सप्रेम नमस्कार। यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपने बी.ए/बी.कॉम कोर्स में हिन्दी को एक विषय के रूप में चुना है। हिन्दी विभाग आपका हार्दिक स्वागत करता है।

बी.ए./बी.कॉम कोर्स में हिन्दी की दो पत्रिकाएं होती हैं।

प्रथम वर्ष में आप काव्य, गद्य और कथा-साहित्य, व्याकरण और अनुवाद का अध्ययन करेंगे।

आपको इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि परीक्षा में पाठ्यों पर ९० अंक के लिए प्रश्न दिए जाएंगे और आंतरिक मूल्यांकन के लिए (Internal Assessment) १० अंक होंगे।

आंतरिक मूल्यांकन के लिए दो से तीन प्रश्न भेजे जाएंगे जिनके उत्तर लिखकर आप हमें भेजेंगे। ९० अंक के लिए वार्षिक परीक्षा होगी। इस पेपर के अंतर्गत काव्य, गद्य, कहानियाँ, व्याकरण तथा अनुवाद होंगे।

इन सभी विषयों पर लिखे गए पाठ भेजे जाएंगे। जिनका आप अध्ययन करेंगे। आपके मन में यदि कोई शंका हो तो समाधान के लिए लिखित रूप में मुझे संपर्क करें।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका

अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
क. रा. मु. विश्वविद्यालय
मानस गंगोत्री, मैसूर-०६

प्रथम बी.ए./बी. काम् - हिन्दी भाषिका

ब्लाक सं

1

काव्य

'स्नातक काव्य संग्रह'

Unit No. 1 to 9	Page No.

इकाई १	कविता का विकास	०१
इकाई २(अ)	कबीरदास	१२
इकाई २(आ)	सूरदास	२९
इकाई ३(अ)	मीराबाई	४०
इकाई ३(आ)	तुलसीदास	४८
इकाई ४(अ)	बिहारी	६३
इकाई ४(आ)	रहीम	७९
इकाई ५(अ)	रामनरेश त्रिपाठी	८७
इकाई ५(आ)	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	९७
इकाई ६(अ)	मैथिलीशरण गुप्त	११०
इकाई ६(आ)	जयशंकर प्रसाद	१२१
इकाई ७(अ)	माखनलाल चतुर्वेदी	१३२
इकाई ७(आ)	बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	१३९
इकाई ८(अ)	सुभद्रा कुमारी चैहान	१४६
इकाई ८(आ)	हरिवंशराय बच्चन	१५२
इकाई ९(अ)	सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय'	१६०
इकाई ९(आ)	नरेश मेहता	१६९

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो. के. एस रंगप्पा संपादक
कुलपति एवं अध्यक्ष
कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय
मानसगंगोत्री, मैसूर

डॉ. कांब्ले अशोक संयोजक
अध्यक्ष
हिन्दी विभाग
कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय

पाठ्यक्रम की लेखिका ब्लाक - १

डॉ. वी. सौभाग्यलक्ष्मी
हिन्दी प्राध्यापिका
महारानी महिला कला एवं वाणिज्य कालेज,
मैसूर

इकाई - १
कविता का विकास

किसी भी भाषा और उसके साहित्य के विकास में पर्याप्त समय लगता है। हिन्दी भाषा और साहित्य भी इसका अपवाद नहीं है। आधुनिक हिन्दी कविता का वर्तमान रूप उसके प्रारंभिक रूप से नितांत भिन्न है। युग एवं परिस्थितियों के अनुरूप उसके स्वरूप और प्रवृत्तियों में भी अंतर आया है जिसके अध्ययन के लिए उसकी विकासयात्रा के विभिन्न सोपानों पर प्रकाश डालना आवश्यक है।

सामान्यतः हिन्दी कविता के विकास को चार काल-खंडों में विभाजित किया गया है।

आदिकाल - ७७० से १३७५ वि.स. तक
भक्तिकाल - १३७५ से १७०० वि.स. तक
रीतिकाल - १७०० से १९०० वि.स. तक
आधुनिक काल - १९०० से आज तक

विक्रम की आठवीं शताब्दी के आरंभ में ही अंती के राजा मान के दरबार में पुष्य नाम का एक कवि था। उस दूरदर्शी कवि ने दोहों और अलंकार ग्रन्थ की रचना करके हिन्दी साहित्य के निर्माण का श्रीगणेश किया।

'शिवसिंह सरोज' में ठाकुर शिवसिंह सेंगर ने प्रथम कवि के रूप में 'पुष्य' का नाम बताया है। पर पुष्य का कोई साहित्य उपलब्ध न होने के कारण यह मत स्वीकार्य नहीं है। राहुल सांकृत्यायन ने सरहपा था सरहपाद (७६९ ई.) को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। डॉ. गणपतिचंद्रगुप्त ने ११-१२ वीं शती के जन कवि शालिभद्र सूरि को हिन्दी का प्रथम कवि माना है। विद्वानों का मत है कि ११वीं शती से पूर्व ही हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में साहित्य रचना हुई थी। अतः सरहपाद को हिन्दी का प्रथम कवि मानना उचित है जिनकी भाषा में आरंभिक हिन्दी की विशेषताएँ विद्यमान हैं और अपभ्रंश का प्रभाव न्यून है। सरहपाद ने मुक्तक पदों की रचना की है। उन पदों को स्वतंत्र ग्रंथ का स्थान नहीं दिया जा सकता। तब, हिन्दी का प्रथम ग्रंथ कौन-सा है? ११ वीं शती में देवसेन कृत 'श्रावकाचार' प्रथम स्वतंत्र ग्रंथ माना गया है जिसमें

श्रावक धर्म का वर्णन है। सरहपाद की रचना को हिन्दी का आरंभिक काव्य कहा जा सकता है।

आदिकाल की राजनैतिक परिस्थिति पर विचार करने से ज्ञात होगा कि यह राजनैतिक दृष्टि से पतन का काल है। सम्राट हर्षवर्द्धन के बाद भारतवर्ष में साम्राज्य स्थापित करने की भावना नहीं रही। कोई शक्तिशाली सम्राट न होने के कारण देश छोटे-छोटे राज्यों में बँट गया।

साथ ही उत्तर-पश्चिम की ओर से मुसलमानों के हमले भी शुरू हुए। उस समय भारत का पश्चिमी भाग ही भारतीय सभ्यता और बल-वैभव का केंद्र था। इसी कारण उधर की भाषा शिष्ट समझी जाती थी और चारण कवि रचना भी उसी भाषा में करते थे। हिन्दी के अभ्युत्थान का यही समय तथा संयोग था। इसीसे इसके प्रारंभिक साहित्य में पश्चिमी भारत की जनता की चित्तवृत्ति की छाप है। उस समय के कवि, चारण और भाट अपने राजा के पराक्रम, शत्रु-संहरण, विजय आदि का अतिरंजित वर्णन करते थे, स्वयं रणक्षेत्रों में जाते और अपने वीरगीतों से योद्धाओं में उत्साह-उमंग बढ़ाते थे। उनका यही काम था और इसी से उनका सम्मान था। ऐसे समय वीरगाथा को छोड़ साहित्य में दूसरी बातें आती ही कैसे? यूरोप के प्रारंभिक साहित्य का भी यही हाल है। वीरता-प्रदर्शन के प्रधान कारणों में प्रेम का होना अनिवार्य होता था। लड़ाई किसी भी कारण से क्यों न हो, उसमें किसी सुन्दरी का आकर्षण ही मुख्य माना जाता था। सौन्दर्य का संवाद सुना, मन लहरा उठा, सेना लेकर उस पर चढ़ गये। वीरता के वर्णन के साथ विरह और प्रेम के वर्णन का भी काफी मसाला मिल गया। इन वर्णनों में कल्पना का ही अधिक विस्तार होता था, वास्तविकता बहुत ही अल्प होती थी।

प्रबंधकाव्य और वीरगीत - इन दो रूपों में वीरगाथाएँ पायी जाती है। पृथ्वीराज रासो साहित्यिक प्रबन्धकाव्य का प्राचीन ग्रन्थ है तथा बीसलदेवरासो वीरगीत का। 'रासो', 'रसायण' शब्द से बना है। रसायण शब्द का प्रयोग पहले 'काव्य' के अर्थ में होता था।

रासो ग्रन्थों में सबसे पहले खुमानरासो का नाम आता है। खुम्माण ने सं. ८६९ से ८९३ तक राज्य किया और २४ युद्ध किये। परन्तु जो उस नाम की पुस्तक मिलती है उसमें महाराणा प्रतापसिंह तक का वर्णन है।

बीसलदेवरासो में अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव के विवाह और उनके रूठकर उड़ीसा चले जाने का कल्पनाप्रधान वर्णन है। १०० पृष्ठों का छोटा ग्रन्थ सिर्फ गाने लायक गीतों में रचा गया है। इसका कवि नरपति नाल्ह है।

पृथ्वीराजरासो का नायक पृथ्वीराज दिल्ली का अन्तिम हिन्दू-सम्राट है; और उसका रचयिता है सम्राट् का सहचर चंदबरदाई। समस्त हिन्दी-जनता के हृदय में इस कवि का एक विशेष भावना-प्रधान स्थान है।

सच पूछा जाय तो हिन्दी का यही आदि काव्य है और चंद ही उसके आदि कवि है। रासो-परम्परा के कई कवियों के बाद जगनिक के आल्हाखंड आता है। कालिंजर के राजा परमाल के यहाँ जगनिक भाट सं. ११३० में रहता था। इसने महोबे के दो प्रसिद्ध वीरों का चरित वीरगीतात्मक काव्य में लिखा। आल्हा और ऊदल ही वे वीर थे। ये गीत आल्हा नाम से मशहूर है और उत्तर भारत के समस्त हिन्दी प्रान्तों में अत्यन्त लोकप्रिय है। आल्हा हिन्दीवालों के जीवन पर जादू का काम करता है। वीररस का संचार जनसाधारण में जैसा आल्हा करता है, वह अकथनीय है। अपढ़, अशिक्षक, जिन्दगी के बोझ से पीड़ित, दीन-हीन जनसमूह में आल्हा कुछ देर के लिए वीरता का बवंडर उठा देता है। उनकी धमनियों में खून दौड़ने लगता है "खट् खट् खट् खट् तेगा बाजै, बाजै छपकि-छपकि तरवार।

धड़ धड़ धड़ धड़ गोला छूटै, धूरि एक है जाय।
सर-सर तीर करे धनुहनते, गोली फटकि-फटकि रह जाय।
भिर सिपाही दोनों दल के -- खींचि-खींचि तरवार।।"

भक्तिकाल को विद्वानों ने 'हिन्दी साहित्य का स्वर्णयुग' माना है। भक्ति की हमारी प्राचीन परम्परा है। हिन्दी-साहित्य में भक्ति की जो तीव्रगामी प्रवृत्ति दिखाई

पड़ी, वह न तो पराजित हिन्दी मनोवृत्ति की द्योतक है और न ईसाइयों की देन है।

भक्तिकाल में जो साहित्य रचा गया वह मुख्यतः पद्य में रचा गया। यह नहीं कहा जा सकता कि सभी भक्तों ने शास्त्रीय दृष्टि से ही साहित्य की रचना की। प्रवृत्तियों की दृष्टि से भक्ति-साहित्य के दो भेद हैं- ज्ञानमार्ग और प्रेममार्ग। उपासना-भेद की दृष्टि से सगुण और निर्गुण विभाग स्वीकार किये गये है। निर्गुण भक्ति काव्य में निराकार ब्रह्म की अनुभूति की प्रधानता है तो, सगुण भक्तिकाव्य में भगवान् विशेषकर राम और कृष्ण की लीलाओं अथवा शक्ति सौंदर्य की अभिव्यंजना का महत्व है।

साहित्य के इतिहास-लेखकों ने भक्तिकाल की दो प्रमुख काव्य धाराओं का उल्लेख किया है - (१) निर्गुण काव्यधारा और (२) सगुण काव्य धारा निर्गुण काव्य धारा के अतंर्गत (१) ज्ञानाश्रयी शाखा और (२) प्रेमाश्रयी शाखा एवं सगुण काव्यधारा के अंतर्गत (१) रामभक्ति शाखा और (२) कृष्णभक्ति शाखा - ये भेद स्वीकार किये गये हैं। ज्ञानाश्रयी शाखा और प्रेमाश्रयी शाखा के काव्य को क्रमशः संतकाव्य और प्रेम-काव्य भी कहा गया है। उसी प्रकार राम काव्य और कृष्ण काव्य की संज्ञा दी गयी है। प्रेम काव्य को सूफी काव्य भी कहते हैं।

संत काव्य परम्परा में कई संत-कवियों के नाम आते है। इस काव्य परम्परा के कवियों पर स्वामी रामानन्द का विशेष प्रभाव द्रष्टव्य है। नाभादास की रचना 'भक्तमाल' के अनुसार रामानन्द की शेष परम्परा में ये नाम है - अनन्तानन्द, कबीरदास, सुखानन्द, सुरसुरा, पद्मावत, नरहरि, पीपा, रैदास, भावानंद, धना, सेन और सुरसुरानंद। इनमें कबीरदास, पीपा, रैदास धना या धन्य और सेन का हिन्दी साहित्य से सम्बन्ध है। कबीर तो इनमें शीर्षस्थ है। सच तो यह है कि हिन्दी संत कवियों की अविच्छिन्न परम्परा कबीर से ही शुरू होती है। संत कवियों में कबीर का निश्चय ही विशिष्ट स्थान है। कबीर की जन्म तिथि संवत् १४५५ और मृत्यु-तिथि १५७५ मानी जाती है। कहा जाता है कि वे करीब १२० वर्ष जीवित रहे। वे निर्गुण काव्यधारा के एक प्रतिनिधि कवि हैं, जो रहस्यवादी भी है। उनमें भावात्मक और

साधनात्मक रहस्यवाद के इन दोनों भेदों का संयक् निर्वाह हुआ है। उनका एकेश्वरवाद अद्वैतवाद के मूल को लेकर चलता है। उन्होंने साधना के लिए हठयोग को भी स्वीकार किया था। वे भक्त, समाज-सुधारक संत और कवि थे। यद्यपि उन्होंने 'मसि कागद' नहीं छुआ है। उनकी कविता अत्यंत लोकप्रिय हुई है। "भाषा पर कबीर का जबर्दस्त अधिकार था। वे वाणी के डिक्टेटर थे। जिस बात को उन्होंने जिस रूप में प्रकट कर देना चाहा। उसे उसी रूप में भाषा से कहलवा दिया।"

अन्य संत कवियों में प्रसिद्ध है धर्मदास (कबीर के शिष्य), रैदास, गुरूनानक, दादूदयाल, सुन्दरदास और मलूकदास। इनमें सुंदरदास पंडित संत कवि हैं, जिनको शास्त्र का अच्छा ज्ञान था।

सूफी काव्य या प्रेम-काव्य परम्परा में मलिक मुहम्मद जायसी का सर्वेश्रेष्ठ स्थान है। इनका जन्म जायस नगर में विक्रम संवत् १५४९ को हुआ था। इनके लिखे ग्रंथ हैं - पद्मावत, अखरावट, आखिरी कलाम, चित्ररेखा, कहरानाम और मसलानामा। इनमें पद्मावत सर्वाधिक प्रसिद्ध प्रबंध काव्य है जिसमें चितौड़ के राजा रत्नसेन और सिंहल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेमकथा के वर्णन द्वारा सूफी दर्शन का निरूपण है। अन्य प्रेम काव्य प्रणेता कवि है - मुल्ला दाऊद (चंदायन), कुतुबन (मृगावती), मंझन (मधुमालती) और उसमान (चित्रावली)। हिन्दू कवियों ने भी प्रेम काव्य लिखे हैं। कुछ कवियों के नाम हैं - दामोदर कवि (लखमसेन पद्मावती कथा), ईश्वरदास (सत्यवती कथा), गणपति (माधवानल कामकन्दला) और कल्लोल कवि (ढोला मारू रा दूल्हा)।

सगुण काव्यधारा के अंतर्गत रामकाव्य परम्परा में स्वामी रामानंद, अग्रदास, ईश्वरदास और गोस्वामी तुलसीदास जैसे भक्तों के नाम उल्लेखनीय हैं। स्वामी रामानंद संस्कृत के प्रकाण्ड पंडित थे। हिन्दी में उनकी रचनाएँ कम हैं। इनका 'रामरक्षा-स्त्रोत' नामक ग्रंथ रामकाव्य परम्परा में एक विशिष्ट ग्रंथ माना गया है। स्वामी रामानंद के शिष्य अग्रदास की रचनाएँ हैं - ध्यान-मंजरी, रामभजन-मंजरी उपासना। बावनी और पदावली ईश्वरदास की दो रचनाएँ प्रसिद्ध हैं - भरत मिलाप

और अंगदपैज। रामभक्ति शाखा के कवियों में गोस्वामी तुलसीदास सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। तुलसीदास की सबसे बड़ी विशेषता उनकी समन्वय दृष्टि है। श्रीरामचरित मानस, विनय-पत्रिका, गीतावली, दोहावली, कवितावली (कवित्त रामायण), रामाज्ञा प्रश्न, रामलला नहछू, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, बरवै रामायण, श्री कृष्ण गीतावली और वैराग्य संदीपिनी तुलसी के ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त कुछ और ग्रंथ भी इनके कहे जाते हैं, जैसे - झलनारामायण, कुण्डलिया रामायण आदि। महाभक्त तुलसीदास एक श्रेष्ठ विश्व कवि है। जिनका श्रीरामचरित मानस अखण्ड यश प्राप्त कर चुका है।

रामकाव्य परम्परा में तुलसी के समकालीन कवि नाभादास के भक्तमाल और अष्टयाम का उल्लेख यहाँ होना चाहिए। भक्तमाल एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। केशवदास का जन्म भक्ति काल में हुआ था। उन्होंने 'रामचंद्रिका' में राम की कथा का वर्णन किया है। परंतु प्रवृत्तियों की दृष्टि से उनका उल्लेख रीतिकाल में किया जाता है।

हिन्दी के कृष्णभक्त कवियों पर मुख्य रूप से वल्लभाचार्य का प्रभाव दर्शित है। वल्लभाचार्य के शिष्यों में सूरदास अग्रगण्य है। सूरदास के प्रामाणिक ग्रंथ है - सूरसागर, सूर सारावली और साहित्यलहरी। 'सूरसागर' सचमुच पद-रत्नों का सागर है। भक्ति का रत्नाकर है। श्रीमद्भागवत् के आधार पर इसकी रचना हुई है। दूसरे शब्दों में वह हिन्दी का भागवत है। उसमें विनय के पदों के अतिरिक्त श्रीकृष्ण की बाल और यौवन लीलाओं का गीतात्मक वर्णन है। वल्लभाचार्य के बाद उनके पुत्र गोस्वामी विट्टलनाथ ने वल्लभाचार्य के चार शिष्य सूरदास, कृष्णदास, कुम्भनदास और परमानन्ददास तथा अपने चार शिष्य गोविन्दस्वामी, छीतस्वामी, चतुर्भुजदास और नंददास का चयन करके सन् १५६५ में 'अष्टछाप' की स्थापना की।

निम्बार्क सम्प्रदाय, राधावल्लभ सम्प्रदाय, हरिदासी या सखी सम्प्रदाय और चैतन्य सम्प्रदाय के कवियों ने भी कृष्ण-काव्यधारा को समृद्ध किया है। सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्णभक्तों में मीराबाई का विशेष स्थान है। उनके पदों से व्यक्त होता है कि वह 'कृष्ण की दीवानी' थी। एक अन्य सम्प्रदाय निरपेक्ष कृष्णभक्त है रसखान, जो

मुसलमान होते हुए भी श्रीकृष्ण के प्रेम-सागर में डूबे हुए थे। वह एक भावुक कवि थे और उच्च कोटि के भक्त भी।

रीतिकाल में सामन्तवादी प्रवृत्ति के कारण राजा-प्रजा में विलासिता थी। उस समय के कवियों ने राधा और कृष्ण को (श्रृंगार रस की) नायिका और नायक के रूप में चित्रित किया है। उस समय एक अच्छी बात तो यह हुई कि लक्षण ग्रंथों का निर्माण हुआ। पर श्रृंगार रस की ही प्रधानता रही। कुछ कवियों ने वीर रस सम्बन्धी रचनाएँ भी कीं। केशवदास, चिन्तामणि कुलपति मिश्र, देव (देवदत्त), भिखारीदास और सूरति मिश्र आदि रीतिबद्ध कवि आचार्य कहलाते हैं। केशव के लक्षण ग्रंथों में कविप्रिया, रसिकप्रिया उल्लेखनीय हैं। कविवर पद्माकर ने भी कवित्व और आचार्यत्व का सफलतापूर्वक निर्वाह किया है। रीतिबद्ध कवियों में बिहारीलाल, सेनापति वृंद और बेनी आदि प्रसिद्ध हैं। घनानंद, ठाकुर और बोधा (बुद्धिसेन) प्रसिद्ध रीतिमुक्त कवि हैं। वीर रस के कवि के रूप में भूषण प्रसिद्ध हैं।

आदिकाल से रीतिकाल तक की हिन्दी कविता की भाषा 'डिंगल' 'पिंगल' व्रजभाषा और अवधी थी तो आधुनिक काल में खड़ीबोली को कविता की भाषा होने का गौरव प्राप्त हुआ। देश की राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि परिस्थितियों में परिवर्तन होने के कारण आधुनिक काल में देश हित, राष्ट्रीयता, धर्म-सुधार और समाज सुधार जैसे नये विषयों पर कविता की जाने लगी। यह ध्यान देने की बात है कि एक ओर रीतिकालीन कवियों की-सी पुरानी धारा चल रही थी तो दूसरी ओर नयी धारा भी आगे बढ़ने लगी। राजा लक्ष्मणसिंह, ठाकुर जगमोहनसिंह, बाबू जगन्नाथ प्रसाद रत्नाकर आदि पुरानी धारा के कवि हैं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने यद्यपि ब्रजभाषा में कविता की है, तथापि वे नयी धारा के कवि माने जाते हैं श्रीधर पाठक, अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध', मैथिलीशरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, सुमित्रानन्दन पंत, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान तथा अन्य कई कवि नयी धारा के हैं। इन कवियों ने राष्ट्रीय तथा सामयिक विषयों पर सुंदर कविता की है।

आधुनिक काल का प्रथम चरण भारतेन्दु युग है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र, प्रतापनारायण मिश्र, अम्बिकादत्त व्यास, राधाकृष्णदास, बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' भारतेन्दुयुगीन उल्लेखनीय कवि हुए। इस युग के कवियों में राष्ट्रीय चेतना और देश-प्रेम अत्यधिक था। उन्होंने तद्युगीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक दुरवस्था का यथार्थ अंकन अपनी रचनाओं में किया। इस समय की राष्ट्रीयता दो प्रकार की है - राजभक्ति और राष्ट्रभक्ति। कतिपय कवियों ने अंग्रेजी शासकों के तथाकथित सुधारों से प्रभावित हो उनकी प्रशंसा की।

विभिन्न समाज-सुधार आंदोलनों से संबद्ध कवियों ने बाल-विवाह, सती-प्रथा को अपना विषय बनाया। प्रकृति का चित्रण स्वतंत्र रूप में होने के साथ-साथ उद्दीपन और नामपरिगणनात्मक शैली में भी हुआ। भारतेन्दु की 'गंगा वर्णन' और 'यमुना वर्णन' तथा ठाकुर जगमोहन सिंह की 'दंडकारण्य' प्रकृतिपरक उल्लेखनीय रचनाएँ हैं।

भारतेन्दुयुगीन कवियों ने ब्रजभाषा तथा खड़ीबोली दोनों में रचनाएँ कीं। पर ब्रज का प्रयोग अधिक हुआ। अम्बिकादत्त व्यास ने खड़ीबोली में 'कंस-वध' लिखा। इन कवियों की रुचि अर्थालंकारों के नियोजन में अधिक रही, पर अनुप्रास आदि का भी सुंदर प्रयोग मिलता है।

भारतेन्दुयुगीन काव्य अपनी राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, भावानुभूति की सच्चाई और यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण विशिष्ट महत्व रखता है। आधुनिक हिंदी-कविता के दूसरे चरण को उत्थान काल अथवा द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई। इस समय अंग्रेजों द्वारा शोषण और दमन-चक्र अपने चरम पर था।

बाल गंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले आदि के नेतृत्व में भारतवासी स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए जूझ रहे थे। अतः काव्य में राष्ट्रीय चेतना अधिक मुखर रही। अतीत का स्मरण तथा तद्युगीन दुरवस्था का अंकन कर कवियों ने राष्ट्रीय पुनरुत्थान की प्रेरणा दी।

मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत-भारती', हरिऔध के 'प्रियप्रवास' को जनजागरण का सफल प्रयास माना गया। विदेशी के बहिष्कार तथा स्वदेशी के प्रयोग पर भी बल दिया गया। कविता का विषय नायक-नायिका का सौंदर्य और प्रेम न रहकर कृषकों, श्रमिकों और निम्नवर्गों का समस्यापूरित जीवन बना।

प्रकृति का चित्रण भी विविध रूपों में हुआ। यद्यपि अधिकांश काव्य गंभीर विषयों पर रचा गया, तथापि रूढ़िवादियों, शोषकों, विदेशी सभ्यता का अनुकरण करने वालों के प्रति तीव्र व्यंग्ययुक्त काव्य भी मिलता है।

द्विवेदी युग भाषा-संस्कार का युग था। खड़ीबोली परिष्कृत, परिमार्जित और व्याकरणनिष्ठ होकर काव्य भाषा बनी। तथापि जगन्नाथदास 'रत्नाकर', सत्यनारायण 'कविरत्न' आदि कवि ब्रजभाषा का ही प्रयोग करते रहे। महाकाव्य, खंडकाव्य, गीतिकाव्य आदि सभी प्रचलित काव्य-रूपों का प्रयोग हुआ।

सन् १९१८ से १९३८ तक का कालखंड छायावाद युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। विदेशियों की साम्राज्यवादी नीति, शोषण एवं दमन, वैज्ञानिक उन्नति एवं नई शिक्षा का प्रचलन तीव्र प्रतिक्रिया लेकर आया। यांत्रिकता के विरोध में गांधीवाद उभरा तथा विदेशी दमन-नीति और द्विवेदीयुगीन अतिशय नैतिकता के विरोध में राष्ट्रीय सांस्कृतिक कविता और व्यक्तिवादी कविता ने जन्म लिया। माखनलाल चतुर्वेदी, रामनरेश त्रिपाठी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान ने राष्ट्रीय काव्य की रचना की। भारत के स्वर्णिम अतीत का स्मरण तथा स्वतंत्रता-प्राप्ति के लिए सर्वस्व बलिदान करने का आह्वान कविता का मूल विषय बना। सामयिक समस्याओं पर भी कुछ रचनाएँ मिलती हैं।

छायावादी काव्य में श्रृंगार भावना मुखर रही। पर इनका श्रृंगार सूक्ष्म अतीन्द्रिय श्रृंगार था जो प्रकृति और नारी के माध्यम से व्यक्त हुआ। इस दृष्टि से प्रसाद की 'कामायनी' उल्लेखनीय है। छायावादी काव्य को प्रकृति-काव्य कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी। प्रकृति का विवध रूपों में वर्णन के साथ ही उस पर मानव